S

Text Book for A.P.

Intermediate First Year

Second Language : Part-II

हिंदी

साहित्य अमृत

Hindi Text

&

कथा रष्मि

Hindi Non-Detailed

Board of Intermediate Education
Andhra Pradesh

Text Book for A.P. Intermediate First Year

Second Language : Part-II

Intermediate
First Year

Hindi
Text Book

Print
May - June, 2018

ALL RIGHTS RESERVED

- No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the publisher.
- This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade, be lent, resold, hird out or otherwise disposed of without the publisher's consent, in any form of binding or cover other than that in which it is published.
- The correct price of this publication is the price printed on this page, any revised price indicated by a rubber stamp or by a sticker or by any other means is incorrect and should be unacceptable.

Printed on
70 GSM SS Maplitho Paper for Inner
200 GSM White Art Card for Title

Price: Rs. 50.00

Published by
EMESCO BOOKS Pvt. Ltd.,
33-22-2, Chandram Buildings, C.R. Road, Chuttugunta, Vijayawada -520 004.
for **Board of Intermediate Education, A.P**
Vijayawada.

Printed at:
Amaravathi Graphics, China Kakani, Guntur Dist.,

Text Book Development Committe-AP

Chief Editor

Prof. Ram Prakash
Head & BOS Chairman
Department of Hindi
S.V.University, Tirupati-517502.

Editors/ Course Writers

Dr. Velpula Mohan Rao
Asst. Prof. in Hindi
SRR & CVR Govt. Degree College (A)
Vijayawada.

Dr. R. SrinivasaRaoPatro
Asst. Prof. in Hindi
Govt. Degree & P.G. College
Narasannapeta, Srikakulam Dist.

Subject Committee Members – BIE, AP

Prof. Ram Prakash
Head & BOS Chairman
Department of Hindi
S.V.University, Tirupati-517502.

Dr. V. Mohan Rao
Asst. Prof. in Hindi
SRR & CVR Govt. Degree College (A)
Vijayawada.

Dr. M. Venkata Yerraiah
J.L. in Hindi, Govt Junior College (B)
Pakala, Chittur Dist.

M. Usha Rani
J.L. in Hindi,Govt. Junior College
Krishnalanka, Vijaywada.

A. Murali Krishana
J.L. in Hindi, Govt. Junior College (B)
Nidadavilu, West. Godavari Dist.

Dr. R. Srinivasa Rao Patro
Asst. Prof. in Hindi
Govt. Degree & P.G. College
Narasannapeta, Srikakulam Dist.

K. Subramanyam
J.L in Hindi, B R Junior College,
Punganur, Chittur Dist.

A. Sobha
J.L. in Hindi,Govt. Junior College
Parawada, Vishakhapatnam Dist.

हिन्दी पाठ्यक्रम

पद्य-भाग — 1 - 12

1. कबीर के दोहे (नीतिपरक उपदेश) 1
2. रहीम के दोहे (नीतिपरक उपदेश) 3
3. फूल की चाह (देशप्रेम) 5
4. सुख-दुःख (जीवन की पहचान) 7
5. भिक्षुक (भुख की पीड़ा) 9
6. अकालऔरउसके बाद (प्राकृतिक प्रकोप) 11

गद्य-भाग — 13 - 42

1. भारतीय संस्कृति औरनारी (संभाषण) 13
2. शिवाजीकासच्चास्वरूप (एकांकी) 20
3. अथातोघुमक्कड जिज्ञासा (यात्रावर्णन) 24
4. पर्यावरणऔरजीवन (निबंध) 31
5. सी.वी. रमन (जीवनी) 35
6. आन्ध्र संस्कृति (लेख) 37

हिन्दी व्याकरण — 43 - 86

1. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण 43
2. काल, लिंग, वचन, कारक 56
3. वर्तनीदोष, 70
4. उपसर्ग, प्रत्यय, विलोम शब्द, समानार्थीशब्द 73
5. अनुवाद 77
6. पत्र-लेखन 81

कथा-रश्मि — 87 - 127

1. पूस की रात (कृषक जीवन की समस्या) 87
2. परदा (आर्थिक विपत्ति की दारूणता) 93
3. चीफ की दावत (वृद्धपीढी की उपेक्षा) 99
4. परमात्माकाकुत्ता (प्रशासनिक दुर्व्यवस्था) 106
5. वापसी (अस्मिताकापीड़ा) 114
6. बदला (भ्रष्टाचार के विरूद्धसंघर्ष) 122

नमूनाप्रश्न-पत्र 128 - 129

कबीरदास

कवि का परिचय

कबीर का जन्म सन् 1398 ई और मृत्यु 1518 ई.में मगहर में हुई । वे जन्म से जुलाहे, काशी के निवासी तथा गुरू रामानन्द के शिष्य रहे । नीरू जुलाहा और नीमा उनके माता-पिता रहे और उनकी पत्नी का नाम लोई तथा पुत्र कमाल तथा पुत्री कमाली रही ।कबीर घुमक्कड प्रवृत्ति के सन्त रहे, उन्हें अवधी, ब्रज़भाषा, खडीबोली, फ़ारसी, अरबी, गुजराती, राजस्थानी बंगाली आदि भाषाओं का ज्ञान था ।

कबीर मूलत: समाज सुधारक और मानवता पर बल देने वाले संत रहे । उन्होंने समाज में व्याप्त पाखंड, अन्धविश्वास, छूआछूत, ऊँचनीच, कुरीतियों आदि सामाजिक बुराइयों का खंडन किया।उनके रचनात्मक विषयों में ईश्वर प्रेम, गुरू महिमा, वेदान्त, जीवमात्र के प्रति दया, और प्रेम की भावनाएँ, सतगुरू, नाम, विश्वास, धैर्य, दया, विचार, औदार्य, क्षमा, संतोष आदि विषय रहे और आलोचनात्मक विषयों में माया, मन, कपट, कनक, कामिनी, भेष, कुसंग, भोगविलास, लालसा, तृष्णा इत्यादि विषयों का वर्णन मिलता है।

ग्रंथ-बीजक, रमैनी और सबद।

दोहे

1. गुरू गोविन्द दोऊ खडे, काके लागौ पॉय।
   बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय ।।

2. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजियो ग्यान।
   मोल करो तरवार का, पडी रहन दो म्यान ।।

3. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
   जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ।।

4. पोथि पढि-पढि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
   ढाई अक्षर प्रेम का, पढे सो पंडित होय ।।

5. दु:ख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय ।
   जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय ।।

6. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
   पल में परलै होयगी, बहुरि करोगे कब ।।

कठिन शब्दार्थ

1. गोविन्द-भगवान, दोऊ-दोनों, काके-किसके, लागौपाँय-चरण स्पर्श करना, बलिहारी-बलिजाऊँ, वारी जाऊँ, आपने-आप पर, दियो-दिया, बताय-बताया ।
2. मोल-कीमत समझो, म्यान-तलवार रखने का खाचा ।
3. साँच-सच, बराबर-समान, जाके-जिसके, हिरदै-हृदय, ताके-उसके, आप-भगवान।
4. पोथी-ग्रंथ, मुआ-बीत गया, भया-बना, सो-जो, होय-हो गया।
5. सुमिरन-जाप या याद करै-करता है, कोय-कोई भी नहीं, काहे-क्यूँ, होय-होगा ।
6. सो-जो, परलै-स्वर्गवास, होयगी-हो जायेगा, बहुरि-फिर ।

भावार्थ

1. इस दोहे में कबीर दास ने गुरू के महत्व को बताते हुए गुरू की भगवान से तुलना की है और गुरू को भगवान से अधिक महत्व दिया है क्योकि गुरू भगवान को पाने का मार्ग और उसकी पहचान करवाते है । इसलिए गुरू का महत्व भगवान से अधिक मानते है ।
2. इस दोहे में कबीर दास जी ने जाति-पाँति का विरोध करते हुए साधु की पहचान उसके ज्ञान से करने का सुझाव देते है, क्योकि साधु के ज्ञान की उपेक्षा कर उसकी जाति पूछना वैसा ही है जैसे तलवार की धार को परखे बिना उसके खाँचे की सुन्दरता पर मोहित हो जाना ।
3. इस दोहे में कबीर ने सच और झूठ की पहचान करवाते हुए सच का महत्व तपस्या के समान और झूठको पाप के समान माना है।
4. इस दोहे में कबीर ने वेद पुराण और शास्त्रों के पठन द्वारा प्रदर्शित ज्ञान को खण्डित कर प्रेम के अनुभव से ही मानव को ज्ञानी होने का सुझाव दिया है।
5. इस दोहे में कबीर दास जी मानव द्वारा दु:ख में ईश्वर को याद करने और सुख में भूल जाने की प्रवृत्ति का परिचय देते है और मनुष्य को दु:खों की मुक्ति के लिए सुख में भी सुमिरण करने का सुझाव देते है ।
6. इस दोहे के माध्यम से कबीर दास जी मानव को उसके जीवन की क्षण भंगुरता से परिचित करवाते है, उनके अनुसार मनुष्य को कोई भी कार्य यथासंभव पूर्ण करना चाहिए, क्योकि मानव इस बात से अपरिचित है कि उसके पास जीवन में कितना समय बचा है।

अभ्यास प्रश्न

1. कबीरदास जी ने गुरू की महिमा कैसे दर्शायी है।
2. कबीरदास ने किससे और क्यों जाति न पूछने की बात कही है।
3. कबीरदास जी ने सच और झूठ के महत्व को कैसे बताया है।
4. कबीर की दृष्टि में प्रेम का क्या स्थान है।
5. कबीर ने ईश्वर को कब याद करने की बात कही है।
6. कबीर ने मानव जीवन की किस विशेषता का परिचय दिया है।

पूस की रात

प्रेमचन्द

कहानीकार का परिचय

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को बनारस के निकट लमही नामक गाँव में हुआ उनका मूल नाम धनपत राय रहा । वे मैट्रिक की पढाई पूरी कर स्कूल में अध्यापक बन गये तथा कालान्तर में बी.ए.पास कर डिप्टी इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल के पद तक पहुँचे । किन्तु असहयोग आंदोलन के समय सरकारी नौकरी छोड कर कुछ समय अध्यापन करने के बाद माधुरी, जागरण, हंस जैसी पत्रिकाओं के सम्पादन और रचनात्मक लेखन में जुड रहे और सन् 1930 में निजी परिश्रम के बल पर हंस पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन आरम्भ किया। सन् 1936 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अधिवेशन की अध्यक्षता की । आर्थिक बोझ से मुक्ति की आकांक्षा में संघर्ष करते हुए जलोदर रोग से जर्जर होकर सन् 1936 के अक्टूबर 8 को उनका देहांत हो गया।

प्रेमचन्द ने लेखन कार्य उर्दू में कहानियाँ और उपन्यास लेखन से आरम्भ किया और उनकी पहली कहानी संसार का अनमोल रत्न (1907) में जमाना में प्रकाशित हुई आरम्भ में वे उर्दू तथा विदेशी कहानीकारों का हिन्दी में अनुवाद करते रहे। जैसे-टैगोर की अनेक कहानियों का उर्दू में अनुवाद किया है वे शुरूआती लेखन में नवाबराय के नाम से उर्दू कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हुए । उनकी उर्दू की कहानियों का संग्रह सोजेवतन (1908) में प्रकाशित हुआ और राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के कारण ये रचना प्रतिबन्धित हो गई और नवाबराय के स्थान पर प्रेमचन्द के नाम से सामाजिक कहानियों का लेखन हिन्दी में आरम्भ किया। उन्होंने लगभग दर्जन भर उपन्यास लिखे। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज और गाँव की समस्याओं तथा जीवन को केन्द्रीय विषय बनाया । विशेषत: दहेज, बेमेल विवाह, बाल विवाह, वेश्यावृत्ति, निरक्षरता, दरिद्रता, जमींदारी शोषण, अत्याचार, अन्याय,, बेगारी,महाजनी कर्ज और ब्याज का दुष्चक्र, मक्कारी, बेईमानी, धार्मिक पांखड, अस्पृश्यता, भेदभाव तथा राष्ट्रीय गुलामी इत्यादि को अपनी रचनाओं का विषय बनाया । उनके लेखन की यात्रा आदर्शवाद से होकर यथार्थवाद की ओर रही है।

प्रेमचन्द से हिन्दी कहानी का एक नया युग आरम्भ हुआ । उन्होंने मनोरंजन की शैली में कहानियाँ न लिखकर आम आदमी के जीवन संघर्ष को दर्शाते हुए सामाजिक कहानियों का लेखन आरम्भ किया। उनकी कहानियाँ चरित्र प्रधान रही है। जीवन की कठिनाईयों, कष्टों और पीडा वेदना की अभिव्यक्ति के कारण वे समाज सुधारक रूप में स्थापित हुए और उनकी कहानियों में मनुष्य के सवोच्च मानवीय पक्ष की प्रस्तुति हुई है, उनकी सुधारात्मक दृष्टि पंचपरमेश्वर, नमक का दारोगा, बडे घर की बेटी, ठाकुर का कुँआ, बूढी काकी, ईदगाह इत्यादि कहानियों में दिखाई देती है, वहीं यथार्थवादी दृष्टि का परिचय कफन, पूस की रात, सद्गति आदि कहानियों में मिलता है। उन्होंने लगभग (300) के करीब कहानियाँ लिखी है जो मानसरोवर के आठ खण्डों में संकलित है । इसतरह प्रेमचन्द का परिचय उपन्यासकार, कहानीकार के रूप में ही नहीं बल्कि निबन्धकार, सम्पादक, जीवनी लेखक, अनुवादक तथा बाल साहित्यकार के रूप में भी मिलता है।

प्रकाशित कृतियाँ

कहानियाँ-मानसरोवर (आठ भाग), प्रेमपचीसी, प्रेम द्वादशी, प्रेम तीर्थ, प्रेमपूर्णिमा, प्रेम प्रसून, नवनिधि, कफन तथा अन्य कहानियाँ आदि तथा, प्रतिनिधि कहानियाँ, सम्पूर्ण कहानियाँ आदि उपन्यास-सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र(अपूर्ण) नाटक-संग्राम, कर्बला, प्रेम की बेटी निबन्ध-कुछ विचार, साहित्य का उद्देश्य, विविध प्रसंग-1,23,

पूस की रात कहानी का परिचय

पूस की रात कहानी कृषक जीवन के कष्टों पर लिखी गई कहानी है जिसमें कहानीकार ने जाडे के दिनों में शीत लहरों का सामना करते हुए खेत की रखवाली करने वाले किसान की पीडा को दर्शाया है । इस कहानी में किसान इतना विपन्न दर्शाया गया कि उसके पास शीत से बनने के लिए कम्बल तक नहीं है, लेकिन उसे अपने खेत की रखवाली करनी है । जब नील गाएँ खेत को रौद देती है तो किसान दु:खी होने के स्थान पर इस बात के लिए संतोष करता है कि उसे जाडे में शीत लहरों का सामना करते हुए ठिठुरना तो नहीं पडेगा। अत: लेखक ने उसकी दयनीयता का सजीव चित्रण कर उसके दु:खों और कष्टों से पाठकों को परिचित करवाया है।

मूल कहानी

हल्कू ने आकर स्त्री से कहा-सहना आया है । लाओ, जो रूपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला तो छूटे।

मुन्नी झाडू लगा रही थी । पीछे फिर कर बोली-तीन ही तो रूपए हैं, दे दोगे तो कम्बल कहाँ से आवेगा? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटैगी ? उससे कह दो, फसल पर दे देंगे। अभी नहीं ।

हल्कू एक क्षण अनिश्चित दिशा में खडा रहा । पूस सिर पर आ गया, कम्बल बिना हार में रात को वह किसी तरह सो नहीं सकता। मगर सहना मानेगा नहीं, घुडकियाँ जमावेगा, गालियाँ देगा। बला से जाडों में मरेंगे, बला तो सिर से टल जाएगी। यह सोचता हुआ वह अपना भारी-भरकम डील लिये हुए(जो उसके नाम को झूठ सिद्ध करता था)स्त्री के समीप आ गया और खुशामद करके बोला-ला दे दे, गला तो छूटे! कम्बल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचूँगा।

मुन्नी उसके पास से दूर हट गई और आँखें तरेरती हुई बोली-कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूँ तो कौन उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कम्बल? न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने में ही नहीं आती ! मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड देते? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई । बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है । पेट के लिए मजूर करो। ऐसी खेती से बाज आए । मैं रूपए न दूँगी - न दूँगी!

हलकू उदास होकर बोला-तो क्या गाली खाऊँ ?

मुन्नी ने तडपकर कहा-गाली क्यों देगा, क्या उसका राज है?

मगर यह कहने के साथ ही उसकी तनी हुई भौंहें ढीली पढ गई। हल्कू के उस वाक्य में जो कठोर सत्य था, वह मानो एक भीषण जन्तु की भाँति उसे घूर रहा था।

उसने जाकर आले पर से रूपए निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिए । फिर बोली- तुम छोड दो अबकी से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है! मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस ।

हल्कू ने रूपये लिए और इस तरह बाहर चला, मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो। उसने मजूरी से एक-एक पैसा काट-काटकर तीन रूपये कम्बल के लिए जमा किए थे। वह आज निकले जा रहे थे । एक-एक पग के साथ उसका मस्तक अपनी दीनता के भार से दबा जा रहा था ।

पूस की अँधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बाँस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढे की चादर ओढे पडा काँप रहा था । खाट के नीचे उसका संगी कुत्ता जबरा पेट में मुँह डाले सर्दी से कूँ-कूँ कर रहा था । दो में से एक को भी नींद न आती थी।

हल्कू ने घुटनियों को गरदन में चिपकाते हुए कहा-क्यों जबरा, जाडा लगता है? कहता तो था, घर में पुआल पर लेट रह, तो यहाँ क्या लेने आए थे! अब खाओ ठंड, मैं क्या करूँ! जानते थे मैं यहाँ हलुआ-पूरी खाने आ रहा हूँ, दौडे-दौडे आगे-आगे चले आए। अब रोओ नानी के नाम को।

जबरा ने पडे-पडे दुम हिलाई और अपनी कूँ-कूँ को दीर्घ बनाता हुआ एक बार जम्हाई लेकर चुप हो गया। उसकी श्वान बुद्धि ने शायद ताड लिया, स्वामी को मेरी कूँ-कूँसे नींद नहीं आ रही है ।

हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा-कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बरफलिये आ रही है! उठूँ फिर चिलम भरूँ । किसी तरह रात को कटे! आठ चिलम तो पी चुका । यह खेती का मजा है! और एक भगवान ऐसे पडे हैं जिनके पास जाडा जाएँ तो गरमी से घबडाकर भागे । मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ, कम्बल। मजाल है, जाडे का गुजर हो जाए । तकदीर की खूबी है ! मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें ।

हल्कू उठा, गड्ढे में से जरा-सी आग निकालकर चिलम भरी। जबरा भी उठ बैठा ।

हल्कू ने चिलम पीते हुए कहा-पिएगा चिलम, जाडा तो क्या जाता है, हाँ, जरा मन बदल जाता है ।

जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा ।

हल्कू-आज और जाडा खा ले । कल से मैं यहाँ पुआल बिछा दूँगा ।उसी में घुसकर बैठना, तब जाडा न लगेगा ।

जबरा ने अपने पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया । हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी ।

चिलम पीकर हल्कू फिर लेटा और निश्चय करके लेटा कि चाहे कुछ हो अबकी सो जाऊँगा; पर एक ही क्षण में उसके हृदय में कम्पन होने लगा । कभी इस करवट लेता, कभी उस करवट, पर जाडा किसी पिशाच की भाँति उसकी छाती को दबाए हुए था ।

जब किसी तरह न रहा गया, उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया । कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद में चिपटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे न मिला था । जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में जो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गन्ध तक न थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता । वह अपनी दीनता से आहत न था; जिसने आज

उसे इस दशा को पहुँचा दिया। नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहट पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झपटकर उठा और छपरी के बाहर भूँकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुमकाकर बुलाया; पर वह उसके पास न आया। हार में चारों तरफ दौड-दौडकर भूँकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता, तो तुरंत ही फिर दौडता। कर्त्तव्य उसके हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

एक घंटा और गुजर गया। रात ने शीत की हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठ बैठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, फिर भी ठंड कम न हुई। ऐसा जान पडता था, सारा रक्त जम गया है, धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रही है। उसने झुककर आकाश की ओर देखा, अभी कितनी रात बाकी है! सप्तर्षि अभी आकाश में आधे भी नहीं चढे। ऊपर आ जाएँगे तब कहीं सवेरा होगा। अभी पहर से ऊपर रात है।

हल्कू के खेत से कोई एक गोली के टप्पे पर आमों का एक बाग था। पतझड शुरू हो गई थी। बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। हल्कू ने सोचा, चलकर पत्तियाँ बटोरू और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। रात को कोई मुझे पत्तियाँ बटोरते देखे तो समझे, कोई भूत है। कौन जाने, कोई जानवर ही छिपा बैठा हो; मगर अब तो बैठे नहीं रहा जाता।

उसने पास के अरहर के खेत में जाकर कई पौधे उखाड लिए और उसका एक झाडू बनाकर हाथ में सुलगता हुआ उपला लिये बगीचे की तरफ चला। जबरा ने उसे आते देखा, पास आया और दुम हिलाने लगा।

हल्कू ने कहा-अब तो नहीं रहा जाता जबरू! चलो बगीचे में पत्तियाँ बटोरकर तापें। टाँटे हो जाएँगे, तो फिर आकर सोएँगें। अभी तो बहुत रात है।

जबरा ने कूँ-कूँ करके सहमति प्रकट की और आगे बगीचे की ओर चला।

बगीचे में खूब अँधेरा छाया हुआ था और अन्धकार में निर्दय पवन पत्तियों को कुचलता हुआ चला जाता था। वृक्षों से ओस की बूँदें टपटप नीचे टपक रही थीं।

एकाएक एक झोंका मेहँदी के फूलों की खुशबू लिये हुए आया।

हल्कू ने कहा-कैसी अच्छी महक आई जबरू! तुम्हारी नाक में कुछ सुगन्ध आ रही है।

जबरा को कहीं जमीन पर एक हड्डी पडी मिल गई थी। उसे चिचोड रहा था।

हल्कू ने आग जमीन पर रख दी और पत्तियाँ बटोरने लगा। जरा देर में पत्तियों का ढेर लग गया। हाथ ठिठुरे जाते थे। नंगे पाँव गले जाते थे। और वह पत्तियों का पहाड खडा कर रहा था। इसी अलाव में वह ठंड को जलाकर भस्म कर देगा।

थोडी देर में अलाव जल उठा। उसकी लौ ऊपर वाले वृक्ष की पत्तियों को छू-छूकर भागने लगी। उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अन्धकार को अपने सिरों पर सँभाले हुए हों। अंधकार के उस अथाह सागर से यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता, मचलता हुआ जान पडता था।

हल्कू अलाव के सामने बैठा आग ताप रहा था। आज क्षण में उसने दोहर उतारकर बगल में दबा ली, दोनों पाँव फैला दिए, मानों ठंड को ललकार रहा हो, तेरे जी में आए सो कर। ठंड की असीम शक्ति पर विजय

पाकर वह विजयगर्व को हृदय में छिपा न सकता था।

उसने जबरा से कहा-क्यों जबरा, अब ठंड नहीं लग रही है ?

जबरा ने कूँ-कूँ करके मानो कहा-अब क्या ठंड लगती ही रहेगी ?

पहले से उपाय न सूझा, नही इतनी ठंड क्यों खाते !

जबरा ने पूँछ हिलाई।

अच्छा, आओ, इस अलाव को कूदकर पार करें। देखें, कौन निकल जाता है। अगर जल गए बच्चा, तो मैं दबा न करूँगा।

जबरा ने उस अग्नि-राशि की ओर कातर नेत्रों से देखा।

मुन्नी से कल न कह देना, नहीं लडाई करेगी ?

यह कहता हुआ वह उछला और उस अलाव के ऊपर से साफनिकल गया! पैरों में जरा लपट लगी; पर वह कोई बात न थी। जबरा आग के गिर्द घूमकर उसके पास आ खडा हुआ।

हल्कू ने कहा-चलो-चलो, इसकी सही नहीं ; ऊपर से कूदकर आओ।वह फिर कूदा और अलाव के इस पार आ गया।

पत्तियाँ जल चुकी थी। बगीचे में फिर अँधेरा छाया था। राख के नीचे कुछ-कुछ आग बाकी थी, जो हवा के झोंका आने पर जरा जाग उठती थी; पर एक क्षण में फिर आँखें बन्द कर लेती थी।

हल्कू ने फिर चादर ओढ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन में गर्मी आ गई थी; पर ज्यों-ज्यों शीत बढती जाती थी, उसे आलस्य दबाए लेता था।

जबरा जोर से भूँककर खेत की ओर भागा। हल्कू को ऐसा मालूम हुआ कि जानवरों का एक झुंड उसके खेत में आया है। शायद नीलगायों का झुंड था। उनके कूदने-दौडने की आवाजें साफकान में आ रही थीं। फिर ऐसा मालूम हुआ कि खेत में चर रही हैं। उनके चबाने की आवाज चर-चर सुनाई देने लगी।

उसने दिल में कहा कि-नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। नोच ही डाले। मुझे भ्रम हो रहा है। कहा ! अब तो कुछ नहीं सुनाई देता। मुझे भी कैसा धोखा हुआ!

उसने जोर से आवाज लगाई-जबरा, जबरा।

जबरा भूँकता रहा। उसके पास न आया।

फिर खेत के चरे जाने की आहट मिली। अब वह अपने को धोखा न दे सका। उसे अपनी जगह से हिलना जहर लग रहा था। कैसा दँदाया हुआ बैठा था। इस जाडे-पाले में खेत में जाना, जानवरों के पीछे दौडना असह्य जान पडा। वह अपनी जगह से न हिला।

उसने जोर से आवाज लगाई-हिलो! हिलो!हिलो!!

जबरा फिर भूँक उठा। जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसी अच्छी खेती थी; पर ये दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किए डालते हैं।

हल्कू पक्का इरादा करके उठा और दो-तीन कदम चला; पर एकाएक हवा का ऐसा ठंडा, चुभनेवाला बिच्छू के डंक का-सा झोंका लगा कि वह फिर बुझते हुए अलाव के पास आ बैठा और राख को कुरेदकर अपनी ठंडी देह को गर्माने लगा।

जबरा अपना गला फाडे डालता था, नीलगाएँ खेत का सफाया किए डालती थीं और हल्कू गर्म राख के पास शान्त बैठा हुआ था। अकर्मण्यता ने रस्सियों की भाँति उसे चारों तरफसे जकड रखा था।

उसी राख के पास गर्म जमीन पर वह चादर ओढकर सो गया।

सबेरे जब उसकी नींद खुली, तब चारों तरफ धूप फैल गई थी और मुन्नी कह रही थी-क्या आज सोते ही रहोगे? तुम यहाँ आकर रम गए और उधर सारा खेत चौपट हो गया।

हल्कू ने उठकर कहा-क्या तू खेत से होकर आ रही है?

मुन्नी बोली-हाँ, सारे खेत का सत्यानाश हो गया। भला, ऐसा भी कोई सोता है! तुम्हारे यहाँ मँडैया डलने से क्या हुआ!

हल्कू ने बहाना किया-मै मरते-मरते बचा, तुझे अपने खेत की पडी है। पेट में ऐसा दरद हुआ, ऐसा दरद हुआ कि मै ही जानता हूँ।

दोनों फिर खेत के डाँड पर आए। देखा, सारा खेत रौंदा पडा हुआ है और जबरा मँडैया के नीचे चित लेटा है, मानो प्राण ही न हो।

दोनों खेत की दशा देख रहे थे। मुन्नी के मुख पर उदासी छाई थी, पर हल्कू प्रसन्न था।

मुन्नी ने चिन्तित होकर कहा-अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पडेगी।

हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा-रात को ठंड में यहाँ सोना तो न पडेगा।

अभ्यास

1. पूस की रात कहानी का सारांश लिखिए।
2. पूस की रात कहानी के रचनात्मक उद्देश्य का परिचय दीजिए।
3. पूस की रात कहानी से प्राप्त होने वाले संदेश को बताईए।
4. पूस की रात कहानी में किसान किन कष्टों का सामना कर रहा था।
5. पूस की रात कहानी में किसान ने किस बात की संतुष्टि की।

अनुवाद (Tranlation)

मानव के लिए भाषा, भगवान से प्राप्त अपूर्व व अद्भुत देन है। यह हमारे भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा के माध्यम से हम ज्ञान को संरक्षित करते हैं तथा उसे परस्पर एक दूसरे तक पहुँचाते हैं। संसार में अनेक भाषाएँ हैं। भारत में ही बाईस प्रमुख भाषाएँ है तथा तीन सौ से अधिक बोलियाँ प्रचलित हैं। विभिन्न भाषा-भाषी मानव समाज और समुदायों के बीच विचार विनिमय का माध्यम ही अनुवाद है अर्थात् किसी एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित कर देना ही अनुवाद है।

मनुष्य अपने ज्ञान और अनुभव को दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। आनेवाली पीढियाँ, वर्तमान या पुरानी पीढियों के ज्ञान से लाभान्वित होती है। इस प्रकार ज्ञान और अनुभव का निरन्तर प्रयास होता रहता है। जिज्ञासा वृत्ति मनुष्य का मूल स्वभाव है इसी ज्ञान पिपासा वृत्ति के कारण प्राचीन काल से मनुष्य भाषा, देश काल की दीवारें लाँघकर, नित नया सीखता रहा है। इस प्रक्रिया में अनुवाद ने बडी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आधुनिक युग में अनुवाद मनुष्य की सामाजिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जरूरत के साथ कार्यलयीन कामकाज की अत्यावश्यक शर्त भी बन गया है। भाषाई स्तर पर संप्रेषण व्यापार हेतु अनुवाद एक अहम आवश्यकता के रूप में उभरकर सामने आया है। अनुवाद का प्रयोजन संकुचित कटघरे से हटकर इस वैज्ञानिक युग में बहु आयामी परिप्रेक्ष्य में उजागर हो रहा है।

अनुवाद मुख्यत: दो प्रकार के होते है - 1. साहित्य अनुवाद 2. साहित्येतर अनुवाद।

साहित्य के अन्तर्गत कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, पर्यटन आदि कृत्तियाँ आती है। ऐसा अनुवाद पुन: सृजन कहलाता है।

साहित्येतर विषयों में ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इतिहास, राजनीति, वाणिज्य शास्त्र, विधि और कानून आदि अनेक विषय आते हैं। यह अनुवाद विषय प्रधान होता है। अत: यह जरूर होता है कि अनुवादक को उक्त विषय का ज्ञान हो साहित्य का उद्देश्य जहाँ आनन्द प्रदान करना होता है। वहीं साहित्येतर का उद्देश्य सूचना अथवा ज्ञान-प्रदान करना होता है। अत: अनुवादक का इस भेद से अवगत होना आवश्यक है। विषय के आधार पर अनुवाद के सामान्यत: निम्नलिखित भेद माने जाते हैं।

1. कार्यालयीन अनुवाद
2. वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद
3. पत्रकारिता अनुवाद
4. विधि साहित्य का अनुवाद
5. ललित साहित्य का अनुवाद
6. तकनीकी अनुवाद आदि।

अनुवाद प्रक्रिया में शब्दकोश, पर्यायवाची कोश, पारिभाषिक कोश आदि उपकरण सहायक होते हैं। अनुवादक के लिए दोनों भाषाओं के ज्ञान के साथ-साथ विषय का ज्ञान, व्याकरण का ज्ञान भी होना चाहिए, अनुवाद एक कला ही नहीं, विज्ञान भी है। सतत् अभ्यास, अनुशीलन तथा अध्ययन द्वारा अनुवाद कला में कार्य कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

1.	प्राध्यापक	-	Lecturer
2.	अध्यापक	-	Teacher
3.	प्राचार्य	-	Principal
4.	आचार्य	-	Professor
5.	विद्यालय	-	School/Collage
6.	विश्वविद्यालय	-	University
7.	आयोग	-	Commission
8.	आयुक्त	-	Commissioner
9.	अनुदेशक	-	Instructor
10.	निरीक्षक	-	Inspector
11.	प्रधान अध्यापक	-	Head master
12.	न्यायपालिका	-	Judiciary
13.	वकील	-	Lawyer
14.	न्यायमूर्ति	-	Justice
15.	लिपिक	-	Clerk
16.	सचिव	-	Secretary
17.	कार्यालय	-	Office
18.	सर्वोच्च न्यायालय	-	Supreme Court
19.	अनुवादक	-	Translator
20.	कुलसचिव	-	Registrar
1)	Administration	-	प्रशासन
2)	Admission Test	-	प्रवेश परीक्षा
3)	Training	-	प्रशिक्षण
4)	Class	-	कक्षा, वर्ग
5)	Constitution	-	संविधान
6)	Advance	-	अग्रिम
7)	Speech	-	भाषण
8)	Seminar	-	संगोष्ठी
9)	Assembly	-	सभा
10)	Parliament	-	संसद
11)	Prime Minister	-	प्रधानमंत्री

12) Speaker - सभापति, वक्ता
13) Chair Person - अध्यक्ष,
14) Editor - सम्पादक
15) Manager - प्रबंधक
16) Cashier - रोकडिया
17) Application - आवेदन पत्र
18) Translation - अनुवाद
19) Technical - तकनीकी
20) Scientific - वैज्ञानिक
21) Arts - कला
22) Science - विज्ञान
23) History - इतिहास
24) Politics - राजनीति
25) Economics - अर्थशास्त्र
26) Chemistry - रसायन
27) Maths - गणित
28) Commerce - वाणिज्य
29) Junior Collage - माध्यमिक विद्यालय
30) Degree Collage - महाविद्यालय,
31) Dictionary - शब्दकोष
32) Work shop - कार्यशाला
33) Department - विभाग
34) Valley - घाट
35) Island - द्वीप
36) Earth Quake - भूकंप
37) Earth - पृथ्वी
38) Energy - शक्ति
39) Sound - ध्वनि, आवाज
40) Space - अंतरिक्ष
41) Physics - भौतिक
42) Light - प्रकाश, रोशनी
43) Fual - ईंधन

44) Play ground - मैदान
45) Games & Sports - खेल-कूद
46) Player - खिलाडी
47) Nation - राष्ट्र
48) Governer - राज्यपाल
49) State Government - राज्य सरकार
50) Editor - संपादक
51) Nurse - परिचालिका
52) Peon - चपरासी
53) Senior - वरिष्ठ
54) Junior - कनिष्ठ
55) Typist - टंकण
56) Eligibity - योग्यता, पात्रता
57) Award - पुरस्कार योग्यता,
58) Auditor - लेखाकार, लेखापाल
59) Accountant - खाता
60) Account Branch - शाखा

Muktibodh aur Samsheel
Telugu Rachnakar (Hindi-Telugu)

*edited by: Dr. **Perisetti Srinivasa Rao***

హిందీ తెలుగుభాషలలో మేటైన స్వీయరచనలతో ... రెండింటినీ కలుపుతూ వారధిలాంటి అనువాద రచనలతో రెండు సాహిత్యాలలో బలమైన పునాదిని వేసిన బహుభాషావేత్త డా॥ పేరిశెట్టి శ్రీనివాసరావు. వక్తగా, రచయితగా, నిత్య అధ్యయన కృషీవలునిగానే కాక కార్యకర్తగా కూడా హిందీ తెలుగు సాహిత్యాలలో అనేక సారవంతమైన కార్యక్రమాలకు రూపకల్పన చేస్తూ, రెండు సాహిత్యాలనూ నిత్యం కలుపుతూ, కదులుతూ, కదిలిస్తూ సాహిత్యానికి మూల లక్షణమైన జీవప్రవాహితను కొనసాగిస్తున్న వారు, కాపాడుతున్నవారు, నిలబెడుతున్నవారు డా॥ పేరిశెట్టి శ్రీనివాసరావు. తెలుగు సాహిత్యాన్ని హిందీలోకి తీసుకువెళ్ళి బలాన్ని పెంచడం, హిందీసాహిత్యాన్ని తెలుగులోకి తీసుకువచ్చి ఇక్కడ బలాన్ని పెంచడం పేరిశెట్టి విశేషం. బల్దేవ్ సింగ్ బద్దన్ హిందీలో వ్రాసిన **'ఛటకారా'** (బాలసాహిత్యం) అనువాదం తెలుగులో **'విముక్తి'** అనే పేరుతో చేశారు. నవలలు, కథలు, నాటిక, కవితలు తెలుగునుండి హిందీలోనికి, హిందీనుండి తెలుగులోనికి అనువాదం చేసిన శ్రీనివాసరావు లబ్ధప్రతిష్ఠులు.

'యశోధర' (చారిత్రక నవల-తెలుగు)ను హిందీలోనికి అనువదించారు. ఈయన హిందీలో వ్రాసిన **'అలూరి బైరాగి కే కవితాఓంమే మానవతావాద్'** మరియు **'ఆచార్య హజారీ ప్రసాద్ ద్వివేదీ కే ఉపన్యాసోంమే సంస్కృతి'** ప్రాచుర్యం పొందినవి. ఆంధ్రప్రదేశ్ హిందీఅకాడెమీ వారిచే 2011లో **'తెలుగుభాషీ హిందీ యువాలేఖక్'** పురస్కారాన్ని పొందారు. **'డా. హరివంశ్ రాయ్ బచ్చన్ : ఏక్ అనుశీలన్'** (హిందీ), **'కవీంద్ర రవీంద్ర కా భారతీయ సాహిత్యపర్ ప్రభావ్'** (హిందీ) అను పుస్తకాలకు సంపాదకత్వం వహించారు. అంతేకాకుండా **తెలుగుభాషా వైతాళికులు గురజాడ, గిడుగు...** పుస్తకానికి కూడా సంపాదకత్వబాధ్యతలు నిర్వహించారు. **'మహాత్మా జ్యోతీరావు ఫూలే'** నాటకాన్ని హిందీలోకి అనువదించి, దానితోపాటు ఎంపిక చేసుకున్న కొన్ని హిందీ కవితల్ని **'నా భాష నీ మనసు'** శీర్షికన ప్రచురించబోతున్నారు. ప్రస్తుతం వీరు పి.జి. & రీసర్చ్ ఇన్‌స్టిట్యూట్, దక్షిణ భారత హిందీ ప్రచారసభ 'బెల్గాం'లో సహాయక ఆచార్యులుగా పనిచేస్తున్నారు.

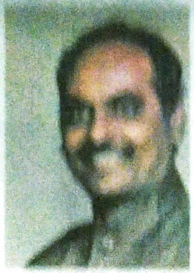

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अध्यापन : उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास [illegible] केन्द्र में प्रवक्ता

संपादक : [illegible]

प्रकाशित रचनाएं : आलूरि बैरागी की कविताओं में मानवतावाद, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में संस्कृति, विमुक्ति (बाल साहित्य हिंदी छूटकारा का तेलुगु अनुवाद)

संपादन : डॉ हरिवंश राय बच्चन एक अनुशीलन, कवीन्द्र रवीन्द्र का भारतीय साहित्य पर प्रभाव, तेलुगु भाषा वैतालिकुलु गुरजाडा, गिडुगु ... (तेलुगु)

सम्मान : आंध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी से तेलुगु भाषी युवा हिन्दी लेखक पुरस्कार से 2011 में सम्मानित किया गया

संपर्क : 31-4-23, #202 साईराम रेसीडेंसी
डी.पी.राव स्ट्रीट, मारुति नगर,
विजयवाड़ा - 520 004 (आंध्र प्रदेश)

ISBN

ISBN 978 93 80693 96 5

9 789380 693965

AKSHARA
SAAHITI - SANSKRITIK - SEVA PEETHAM
RAJAHMUNDRY - 533 103
e-mail: srperisetti@gmail.com Ph.: 9989242343

मुक्तिबोध और समशील तेलुगु रचनाकार

अक्षरा

मुक्तिबोध और समशील तेलुगु रचनाकार

ముక్తిబోధ్ ఔర్ సమశీల్ తెలుగు రచనాకార్

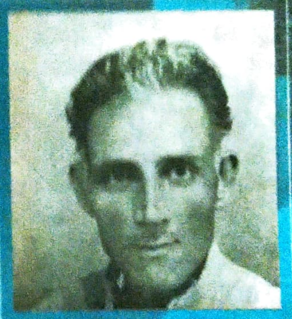

पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव

अनुक्रम / అనుక్రమణిక

ముందుమాట v

संपादकीय vii

1. बहुत कुछ सीखना है मुक्तिबोध से - हरि राम मीणा 1
2. खतरे में अभिव्यक्ति - रंजना अरगडे 14
3. फासीवादी दस्तक का दस्तावेज : अंधेरे में - रामप्रकाश 24
4. मुक्तिबोध का आलोचनागत अवदान - मृदुला शुक्ल 34
5. मुक्तिबोध के संदर्भ में रामविलास शर्मा के पूर्वग्रह - जे.आत्माराम 42
6. मुक्तिबोध की आलोचना में संवेदनात्मक ज्ञान - हरि रामप्रसाद पसुपुलेटी 51
7. मुक्तिबोध का परम्परा बोध 'एक अन्तर्कथा' के आइने से - प्यारा सिंह 54
8. मुक्तिबोध के साहित्य में व्यक्ति - सूर्यकांत त्रिपाठी 58
9. मुक्तिबोध की कविता 'तुम लोगों से दूर':एक विश्लेषण - सरोज सिंह 65
10. प्रगतिशील काव्य धारा और मुक्तिबोध - टी.सुमती 68
11. मुक्तिबोध की कविताएँ : एक विश्लेषण - पी.वी.डी.श्रीदेवी 72
12. मुक्तिबोध के काव्य में व्यक्त यथार्थ - बिभा कुमारी 77
13. नूतन प्रतीकों का जीवन्त दस्तावेज: चाँद का मुँह टेढ़ा है - रचना 84
14. मुक्तिबोध के काव्यों में सामाजिक चित्रण - पी.आर.वासुदेवन शेष 91
15. मुक्तिबोध की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ - कोडगावे किशन 97
16. मुक्तिबोध की कविताओं में यथार्थबोध - सीहेच.वी.महालक्ष्मी 100
17. मुक्तिबोध के काव्य में समाज बोध - के. श्याम सुंदर 105
18. मुक्तिबोध की कविता में व्यंग्य की प्रासंगिकता - वर्षारानी सहदेव 109
19. समाजवादी कवि 'मुक्तिबोध' - करि.सुधा 118
20. मुक्तिबोध की कविताओं में समाज ('अंधेरे में' कविता के संदर्भ में) - पोलानी सुरेश 122
21. मुक्तिबोध की कविताओं में चेतना दृष्टि - आदिनारायण बादावत 126
22. मुक्तिबोध की कविता में जीवन दृष्टि - के.रेणुका 128
23. मुक्तिबोध की कविताओं में आत्मसंघर्ष - पी.तिरुपतम्मा 132
24. हिन्दी साहित्य में मुक्तिबोध का महत्व - जे.सेन्दामरै 136
25. मुक्तिबोध काव्य - जिन्दगी की कोख में जन्मा नया इस्पात - फेन्टेसी का रूप - वेदुला रमा पद्मजा 139
26. मुक्तिबोध के काव्य में फैंटेसी - आर.श्रीनिवासराव पात्रो 142
27. मुक्तिबोध की काव्यभाषा में यथार्थ - आक्रोश - नयना डेलीवाला 147
28. मुक्तिबोधः काव्य भाषा के शिल्पकार - संजय प्रसाद श्रीवास्तव 152
29. अद्भुत रचना-दृष्टि के गजानन माधव 'मुक्तिबोध':एक अध्ययन - वी.सरोजिनी 159
30. नवयुवक कवि मुक्तिबोध - वी. कांचनमाला 165
31. हिंदी साहित्य के आलोच्य रचनाकार गजानन माधव 'मुक्तिबोध' - एम. सीता महालक्ष्मी 169
32. कहानीकार मुक्तिबोध - भानुबहन एम. चौधरी 171
33. मुक्तिबोध की कहानियों में अभिशप्त बुद्धिजीवी वर्ग - अनीता पटेल 180
34. आलूरि बैरागी और गजाननमाधव मुक्तिबोध काव्य में चित्रित समाज - एस.वी.एस.एस.नारायण राजु 185
35. प्रगतिशील चेतना के वाहक मुक्तिबोध और शेषेन्द्र - पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव 187
36. मुक्तिबोध - श्री श्री - अन्नपूर्णा. सी. 193
37. मुक्तिबोध एवं के.शिवा रेड्डी की कविता में प्रगतिवादी चेतना - जी.वी.रत्नाकर 199
38. తెలుగువారి మణిదీపం - దాశరథి - గోవిందారం వెంకటరాజం 203
39. బహుముఖ ప్రజ్ఞాశాలి - ప్యారక శేషాచార్యులు - నక్క హరికృష్ణ 209
40. దిగంబర కవిత్వంలో జ్వాలాముఖి సాహిత్యం - సామాజిక చింతన - ఎ.యం.తాయారు 212
41. "ఎందుకో ఆ హృదిన అన్ని ఆలోచనలు" - కాళోజినారాయణరావు - సుమలత సనాతన 220
42. ఆధునిక తెలుగు కవులు - కవితా రీతులు - డ. మీనారాణి 226
43. అభ్యుదయ విప్లవ కవిత్వం ఒక పరిశీలన - అరసవిల్లి కృష్ణ 231
44. తెలుగులో స్త్రీవాద కవిత్వం - ఒక కోణం - బెల్లంకొండ సంపత్ కుమార్ 239
45. పురోగామి కవిత్వం - వందేమాతర కావ్యం - రంకిరెడ్డి రామమోహనరావు 244
46. ఆంధ్రశతక వాఙ్మయము - సుమతీ శతకము - డి.జీవనశ్రీ 252
47. మినీ కవిత్వం - వస్తు వైవిధ్యం - గుమ్మా సాంబశివరావు 256
48. హైకు కవిత్వం - వస్తు రూప వైవిధ్యం -సత్రీ 262
49. తెలుగు గజల్ - పత్తిపాక మోహన్ 269
50. పాటగా కవిత - పేరిశెట్టి వెంకట సీతాదేవి 276
51. ఒక అపురూప కవి - పన్నాల సుబ్రహ్మణ్య భట్టు 280
52. సామ్యవాద పథంలో సోమసుందర్ మరియు ముక్తిబోధ్ - జె.కె.విశ్వేశ్వరరావు 287
53. శ్రీశ్రీ, ముక్తిబోధ్ - సృజన దర్శనం - రామతీర్థ 292

•••

26

मुक्तिबोध के काव्य में फैंटेसी

- आर.श्रीनिवासराव पात्रो

गजानन माधव मुक्तिबोध आधुनिक काल के ऐसे कवि है जिन्होंने जीवन की व्याख्या में समग्रता को महत्व दिया है। धर्म, इतिहास, कला, विज्ञान, संस्कृति, और दर्शन का पाठक साधन होने के नाते इन्होंने मूल्यगत जागतिक सूत्रों की खोजने का साहस किया है। दूसरी ओर इनमें आधुनिक जीवन के भावबोधों को रूपाकार देनेवाले सैद्धान्तिक विचारधाराओं जैसे मार्क्सवाद, फ्रायड़वाद, अस्तित्ववाद, मानववादी अस्तित्ववाद, शून्यवाद आदि का चिन्तन है।

मुक्तिबोध के काव्य में हमें आधुनिक जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने आधुनिक समाज में निम्न मध्यवर्ग या मध्यवर्ग के व्यक्ति की विवशता, सर्वहारा या मजदूर व्यक्ति के शोषण और पूंजीवादी सभ्यता में व्यक्ति की बिकाऊ प्रवृत्ति और पूंजीवाद के शोषण आदि ऐसे विषयों को लिया है जो आधुनिक जीवन के यथार्थ से अपना गहरा संबंध रखते हैं। उनके काव्य की मुख्य विशेषता है अनुभव जगत के आभ्यंतर (आंतरिक) और बाह्य पक्षों (बाहरी पक्ष) के द्वंद्व पूर्ण संबंध को व्यक्त करना उनकी कविताओं में जहाँ बाहरी जगत् अंतर्मन में प्रतिबिम्बित होता है वहाँ वह मन की गुत्थियों को लेकर प्रकट होता है -

''जितना ही तीव्र है द्वंद्व क्रियाओं / का घनटाओं बाहरी दुनिया में / उतनी ही तेजी से भीतरी दुनियां में / चलता है द्वंद्व ।''

मुक्तिबोध की रचनाओं में वैयक्तिक विवेक मानववादी दृष्टिकोण, आत्मचेतना व्यक्ति की गरिमा आदि के रूप में आधुनिक भाव बोध स्पष्टता के साथ अभरा है। उन्होंने रूढ़ियों के प्रति अत्यन्त प्रखर विद्रोह किया और वर्तमान यांत्रिक जीवन पद्धति और सभ्यता की विसंगतियों के बीच नवीन जीवन मूल्यों की उपलब्धि के लिए आकुलता प्रकट की। कहा जाता है कि ''कबीर और निराला की परम्परा में मुक्तिबोध ही एक ऐसे कवि है जिनका व्यंग्य समाज को नैतिक न्याय और सामाजिक सत्य के सामने ख़डा करता है।

मुक्तिबोध की काव्य कला की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने मानव जीवन की जटिल संवेदनाओं और उसके अन्तर्द्वन्द्वों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के

लिए फैंटेसियों का कलात्मक उपयोग किया है। उन्होंने फैंटेसी पर इस प्रकार विचार व्यक्त किया है ..... वह स्वप्न के भीतर एक स्वप्न, विचारधारा के भीतर और एक प्रच्छन्न विचारधारा कथ्य के भीतर एक और कथ्य, मस्तिष्क के भीतर एक और मस्तिष्क, कक्ष के भीतर एक और गुप्त कक्ष है।

मुक्तिबोध की फैंटेसी केवल भ्रम नहीं है उसमें यथार्थ है और विचार है आत्मालोचना भी है चिन्तन भी -

सपनों में चलती है आलोचना

विचारों के चित्रों की अवलि में चिन्तन

मुक्तिबोध की ''लकड़ी का रावण,'' ''ब्रह्मराक्षस'' और ''अंधेरे में'' कविताएं फैंटेसी के कारण अधिक चर्चित रही हैं। कहा जाता है इन तीनों कविताएं सही अर्थो में लंबी कविता का अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करनेवाली नई कविता की प्रदीर्घ कविताएं कही जा सकती है। मुक्तिबोध ने इसमें फैंटेसी, प्रतीकात्मकता और अन्तर्द्वन्द्वात्मक मनः स्थितियों का कलात्मक अभिव्यंजन किया है।

मुक्तिबोध अत्यंत ही चिंतनशील कवि है। उन्होंने अपने अनुभवों को व्यक्त करने केलिए फैंटसी शैली को अपनाया है। मुक्तिबोध ने स्वयं इस सन्दर्भ में कहा है कि यथार्थ के तत्व परस्पर गुंफित होते हैं। साथ ही पूरा यथार्थ गतिशील होता हैं। अभिव्यक्ति का विषय बनाकर जो यथार्थ प्रस्तुत होता है वह भी गतिशील है और उसके तत्व भी परस्पर गुंफित हैं। यही कारण है कि मैं छोटी कविता नहीं लिख पाता।

मुक्तिबोध की कविता में फैन्टेसी के दो रूप है। पहला, एक कविता में एक ही बड़ी फैन्टेसी का प्रयोग जिसके भीतर कई छोटी छोटी फैन्टेसी रहती है। दूसरा, एक कवि में अनेक फैन्टेसी का एक साथ प्रयोग। मुक्तिबोध की फैन्टेसी एक ओर अपने युग के अन्तर्विरोध की यथार्थ अभिव्यक्ति करती है। दूसरी ओर वे कवि के अन्तर्द्वन्द्व की जटिलता को भी व्यक्त करती है।

मुक्तिबोध की सर्वाधिक चर्चित कविता 'अंधेरे में' एक लम्बी कविता 45 पृष्ठों की है। पूरी कविता में आठ खण्ड है। इन्हें मुक्तिबोध की भी कहा जा सकता है। यह कविता मुक्तिबोध की व्यक्तिगत और सामाजिक सन्दर्भों की त्रासदी की अभिव्यक्ति है।

''अँधेरे में'' समकालीन समाज और मनुष्यता का भयावह यथार्थ अनेक रूपों में व्यक्त हुआ है। इस यथार्थ की अभिव्यक्ति मुक्तिबोध ने फैंटेसी के माध्यम से की है जिसमें पूरी कविता एक स्वप्न कथा के रूप में चलती है। डॉ.नामवर सिंह इस कविता में फैंटेसी के प्रयोग को दूसरी दृष्टि से देखते हैं। उनके अनुसार स्वप्न शैली में कथा कहने के कारण 'अंधेरे में' कविता में काफी मितव्ययता और सघविता आ गई तथा वर्णन के अनावश्यक विस्तार से अपने आप ही निजात मिल गयी है।

'अंधेरे में' कविता मुक्तिबोध की एक ऐसी ही कविता है जिसमें सामाजिक दंशों, द्वेषों के विरूद्ध आत्म सम्मान की मर्यादित भावनाओं का भी बाहुल्य है और इसकी प्राप्ति के लिए विद्रोह और भर्त्सना, क्रांति और प्रार्थना का सचेत आग्रह भी।

यह कविता मुक्तिबोध की व्यक्तिगत और सामाजिक सन्दर्भो की त्रासदी की अभिव्यक्ति है। 'अंधेरे में' समकालीन समाज और मनुष्यता का भयावह यथार्थ अनेक रूपों में व्यक्त हुआ है। इस यथार्थ की अभिव्यक्ति मुक्तिबोध ने फैंटेसी के माध्यम से की है जिसमें पूरी कविता एक स्वप्न कथा के रूप में चलती है। इस कविता का प्रारम्भ भी कवि मुक्तिबोध ने 'फैंटेसीपरक' वातावरण से किया है।

वृक्षों के अंधेरे में छिपी हुई किसी एक / तिलस्मी खोह का शिलादार / खुलता है धड़ से / घूमता है लाल लाल मशाल अजीब-सी / अन्तराल बिवर के तम में / लाल-लाल कुहरा / कुहरे में सामने खतालोक स्नात पुरूष एक रहस्य साक्षात् ।

'अंधेरे में' कविता में दो खतालोक स्नात पुरूष इनमें से एक तो अंधेरे कमरा में चक्कर लगा रहा है। बाहर तालाब की लहरों में अपना चेहरा देखता हुआ भीतर आने के लिए सांकल बजा रहा है। वस्तुतः ये दोनों रक्तालोक स्नात पुरूष क्रमशः सामाजिकता एवं कविता के प्रतीक है। मुक्तिबोध इन प्रतीकों के माध्यम से यह कहना चाहते है कि मनुष्य की पूर्ण संभावनाएं तभी प्रकट होगी जब कविता सामाजिकता को ग्रहण कर ले दूसरे शब्दों में दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।

मुक्तिबोध की इस कविता में जिस अंधेरे का उल्लेख है, वह यह संकेतित करता है कि आज सामाजिकता अव्यवस्था से घिर गई है तथा कवि के मानस में भी अंधेरा भर गया है, उसका व्यक्तित्व भी अन्धकार ग्रस्त है। उसे आत्मान्वेष करते हुए उपलब्ध जीवन सत्यों से आत्म विस्तार करना होगा तभी यह अंधेरा दूर होगा। उसे 'मैं' से हम की ओर जाना होगा, अपनी अस्मिता एवं इयत्ता को समाज समर्पित करना होगा। तभी आत्मशुद्धि होगा और तभी प्रकाश होगा। निश्चय ही यह कविता मुक्तिबोध के आत्म परिष्कार एवं आत्म विस्तार को द्योंचित करने वाली फैंटेसी है। यहाँ श्क्तालोक स्नात पुरूष को मानव संस्कृति के विकास हेतु संघर्षरत 'संस्कृति पुरूष' कवि का प्रतीक माना जा सकता है जो मध्यवर्ग की आदर्शवादिता को दृढ़ता से धारण किए हुए है और जिसकी प्रवृत्ति समझौतावादी नहीं है।

'प्रभाकर श्रोत्रीय' के अनुसार 'अंधेरे में' कविता क्लासिकी और सामाजिक दृष्टि से आज भी चुनौतीपूर्ण रचना है। इस संदर्भ में अंधेरे में एक कालजयी और असमाप्त कविता है जिसमें कला और कविता के पुनर्सृजन की सम्भावनाएं छिपी हुई है।

मुक्तिबोध जटिल रचना प्रक्रिया के कवि। उनकी इस 'अंधेरे में' कविता में अर्थ के सूक्ष्म और जटिल स्तर मिलते हैं जो मुक्तिबोध के व्यक्तित्व और अनुभवों की देन है।

श्रीकांत वर्मा के अनुसार - 'अंधेरे में' मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविता है जो अपने युग की घटनाओं से नहीं बल्कि उसकी बनावट से सामना करती पहले भी यह कहा जा चुका है कि मुक्तिबोध की इस लम्बी कविता को टुकडे टुकडे में नहीं देखा जा सकता। इस कविता में कवि मुक्तिबोध के अनुभव, संवेदना, इन्द्रियबोध और उनके विचार सबकी संहिति इस प्रकार है कि अपनी समग्रता विकास और संवेदना के अन्तर्द्वन्द्व में ही उसे समझा जा सकता है।

इस प्रकार 'अंधेरे' में कविता मुक्तिबोध के जीवन - दर्शन, रचना - प्रक्रिया और अभिव्यत्ति के संघर्ष को समझने के लिए ही नहीं बल्कि समकालीन समय और समाज पर छाए संकट कर अनुभव करने की सीमा तक प्रासंगिक है। अपने गहरे और अकटाय राजनैतिक और मानव अर्थों में 'अंधेरे में' हिन्दी की उन थोडी सी आधुनिक कविताओं में से एक है जो मनुष्य की उलझनों, विकृतियों और आकांक्षाओं को एक ऐसी अन्तर्कथा कहती है जिसके आशय समय के साथ बदलने और नई प्रासंगिकता प्राप्त करने चलते है।

ब्रह्मराक्षस कविता मुक्तिबोध की अत्यंत सशक्त रचना है। 'ब्रह्मराक्षस' एक मध्यवर्गीय बुद्दिजीवी है। वह यह मद्यवर्ग बुद्धिजीवी का प्रतीक है। वह अपने वर्ग के जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक नहीं रहता है। वह अपने ज्ञान का समाज कल्याण के लिए उपयोग नहीं करता। वह अपने ज्ञानकूल से नहीं निकल पाता। परिणामस्वरूप वह अपनी आत्ममुक्ति के लिए छटपटा रहा है। वह इन्हीं वर्गीय संस्कारों की पाप छाया को स्वच्छ करने के लिए बावड़ी में दिन - रात स्नान करता रहता है और देह घिसता रहता है किन्तु उसका मैल कम होने की बजाय बढ़ता ही जाता है।

गहन अनुमानिता / तन की मलिनता / दूर करने के लिए प्रतिफल / पाप छाया दूर करने के लिए, दिन रात / स्वच्छ करने / ब्रह्मराक्षस / घिस रहा है देह / हाथ के पंजे बराबर / बांह छाती मुंह छपाछप / कहो साफ

मुक्तिबोध के ब्रह्मराक्षस का संकेत यह है कि 'व्यक्ति' प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक नहीं बना पाता, उसे क्रिया (एक्शन) में परिणत नहीं कर पाता परिणामतः भटकता रहता है कि और फ्रस्ट्रेशन (कुण्ठा, निराशा इत्यादि) का शिकार हो जाता है। यहाँ कवि यह कहना चारता है कि संचित अनुभव और ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह निरंतर विकसित एवं प्रवर्द्वित होता रहे और भावी ज्ञान की आधारशिला बने। यदि ऐसा नहीं होगा तो अतीत का ज्ञानात्मक संवेदन और अनुभव व्यर्थ प्रमाणित हो जाएगा।

वस्तुतः ब्रह्मराक्षस की ट्रेजेडी आज के बुद्धिजीवी की ट्रेजेडी है। वह ज्ञानोपार्जन करके भी मनोवांछित परिवर्तन नही कर पाता। इस प्रक्रिया में वह जो

प्रयत्न करता है, वे असफल हो जाते हैं परिणामतः वह निराशा एवं कुण्ठा से भर जाता है। उसकी मूल विडम्बना यह है कि वह उपलब्ध ज्ञान को क्रिया में नहीं बदल पाता परिणामतः अन्तः बाह्य संघर्ष में जूझता रहता है।

मुक्तिबोध की धारणा थी कि अतीत से पूरी तरह टूटकर कोई भी वर्तमान सार्थक भविष्य का रूप नही ले सकता। इस ब्रह्मराक्षस कविता में वे उसी विचारधारा को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हैं। ब्रह्मराक्षस अतीत की बौद्विक चेतना है जो बावड़ी रूपी वर्तमान समूह मन में रहता है और अपनी आत्मा के अन्वेषण में रत है। कवि अपनी 'फैंटेसियों' में प्रतीकों का माध्यम ग्रहण करते हैं। वे सामान्य भाषा में नही अपितु प्रतीकों और बिम्बों की भाषा में बोलते हैं।

मुक्तिबोध की कुछ अन्य कविताएं यथा - दिमागी गुहान्धकार का ओरांग उटांग, चांद का मुँह टेढ़ा है, लकडों का रावण भी फेंटेसीपरक कविताएँ हैं। 'ओरांग उटांग' से कवि का अभिप्राय मन की भीतरी परतों में दबे अवचेतन से है। यथा

कोठे के सांवले गुहान्धकार में
मजबूत सन्दूक
दृढ भारी - भरकम
और उस सन्दूक के भीतर कोई बन्द है ....

■

डॉ. आर. श्रीनिवास राव पात्रो, सहायक आचार्य (हिंदी) शासकीय महाविद्यालय, नरसन्नपेट, श्रीकाकुलम जिला। (आं.प्र.)

27

मुक्तिबोध की काव्यभाषा में यथार्थ - आक्रोश

- नयना डेलीवाला

काव्य भाषा विश्व साहित्य में हमेशा से ही महत्वपूर्ण रही है। युनानी विचारकों ने भी कवि कर्म में भाषा को ही प्रधानता दी है और भारतीय काव्यशास्त्र में भाषा को साहित्य में बहुत महत्व दिया है। काव्य भाषा सामान्यतः पृथक नहीं अपितु उसका विशिष्ट रूप होती है क्योंकि सामान्य भाषा में भावों की अभिव्यक्ति उतनी सहज और सरल नहीं होती, साथ ही सामान्य भाषा शिक्षित और बुद्धिजीवी वर्ग के स्तर से भिन्न होती है।

विश्व साहित्य की ये स्थिति है कि रचनाकार को एक साथ काव्य चिन्तक एवं आलोचक भी बनना पड़ता है। कई सालों से यह स्थिति हिंदी साहित्य में भी प्रवर्तमान है। मुक्तिबोध भी इससे बच नहीं पाये। उन्होंने कहा है ..... ''मैं, मुख्यतः विचारक न होकर केवल कवि हूँ। किंतु आजका युग ऐसा है कि विभिन्न विषयों पर उन्हें भी मनोमंथन करना पड़ता है।'' अनेक कवियों की भांति मुक्तिबोध का भी स्वानुभूत सत्य है।

मुक्तिबोध ने एक स्थान पर लिखा है, ''कवि भाषा का निर्माण करता है। जो कवि भाषा का निर्माण करता है, विकास करता है, वह निस्संदेह महान होता है।''[1] भाषा एक जीवित परम्परा है जो निरन्तर चलती रहती है। भाषा एक सामाजिक निधि है जो साहित्य में रचनाकार की अनुभूति के रूप में उतर साहित्य जगत को रौशन करती है। मुक्तिबोध के अनुसार, ''कलाकार को शब्द साधना द्वारा नये-नये भाव और नये अर्थ स्वप्न मिलते हैं।[2]

'अंधेरे में' कविता को मुक्तिबोध की कविताओं का सार - योग और कवि-कर्म की चरम परिणति स्वीकार किया जाता है। यह मध्यवर्गीयों की दृष्टि साफ करती है, क्योंकि यह आधुनिक जन-जीवन की और विशेष रूप से भारतीय जन-जीवन की त्रासदी का ऐसा दस्तावेज समझी जा रही है, जो 'नये - नये संदर्भों में निरंतर पुनर्जीवित होते रहने की अचूक क्षमता से युक्त है।' इस कविता में बलिदान, भय और क्रान्ति की अवधारणाएं निहित है। इसकी पृष्ठभूमि के रूप में मुक्तिबोध ने

Kavindra Ravindra Ka
Bharatiya Sahitya Par Prabhav
- *Dr. Perisetti Srinivasa Rao*

जन्म : 6 सितम्बर, 1969 ई. को राजमहेन्द्रवरम (आंध्रप्रदेश) में

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा तथा स्नातक राजमहेन्द्रवरम के स्कूल-कॉलेजों में

स्नातकोत्तर एवं एम.फिल (हिन्दी) आंध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से

पीएच.डी., उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास, हैदराबाद केन्द्र से

अध्यापन : उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (आंध्र) माचवरम, विजयवाड़ा केन्द्र में प्रवक्ता

संपादक : अमर अक्षरा त्रैमासिक

डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव का लेखन हिन्दी, तेलुगु और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में उपलब्ध हैं। आलोचना, कविता, संपादन और अनुवाद के क्षेत्र में उनकी पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं

सम्मान : आंध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी से तेलुगु भाषी युवा हिन्दी लेखक पुरस्कार से 2011 में सम्मानित किया गया

संपर्क : 31-4-23, #202 साईराम रेजीडेंसी,
जी.पी.राव स्ट्रीट, मारुती नगर,
विजयवाड़ा 520 004 (आंध्र प्रदेश)

ई-मेल : srperisetti@gmail.com

मोबाइल : +91 99892 42343

✓ ISBN

AKSHARA
SAAHITI - SANSKRITIKA - SEVA PEETHAM
RAJAHMUNDRY

ISBN 978 93 5258 6158
9 789352 586158

₹ 600/-

अक्षरा

कवीन्द्र रवीन्द्र का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव

Kavindra Ravindra ka Bharatiya Sahitya par Prabhav
Proceedings of the National Seminar(Hindi) 2015
Organised by
Akshara Saahiti Sanskritik Sewa Peetham (Regd.)
Rajamahendravaram
In Collaboration with
Dept of Hindi, Acharya Nagarjuna University, Guntur (A.P)
ISBN : 978- 93- 5258-615-8
कवीन्द्र रवीन्द्र का भारतीय साहित्य पर प्रभाव
संपादक : डॉ. पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव
अक्षरा साहिती सांस्कृतिक सेवा -पीठम, राजमहेन्द्रवरम - 533103
द्वारा प्रकाशित
Published by :
Akshara Saahiti Sanskritik Sewa Peetham (Regd.)
Office : 31-4-23, Flat No :202
Sai Ram Residency, G.P.Rao Street
Maruthi Nagar, Vijayawada - 520 004
Mobile : 0 9989242343 e -mail : srperisetti @gmail.com

© संपादक

प्रथम संस्करण : 2016

प्रतियाँ : 500

मूल्य : ₹ **699/-**

आवरण : अ. गिरिधर

कंप्यूटर कम्पोजिंग : सुधा प्रिंटिंग वर्क्स, अरंडल पेट, विययवाडा - 520002

मुद्रक : नागेंद्र प्रेस, गांधीनगर, विययवाडा - 520003
For copies :
Smt. **K.V.Seetha Devi**
Office : 31-4-23, Flat No :202
Sai Ram Residency, G.P.Rao Street
Maruthi Nagar, Vijayawada - 520 004
Mobile : 0 9989242343
e -mail : srperisetti @gmail.com

Kavindra Ravindra ka Bharatiya Sahitya par Prabhav(Criticism)- 2016
Edited by : Dr. Perisetti SrinivasaRao

22.साहित्य, कला एवं शिक्षा का त्रिवेणी संगम:विश्वकवि टैगोर - -डी.जनार्धन 128
23.रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार मे जन सामान्य की शिक्षा -श्रीनिवास परिमला 131
24.टैगोर की दृष्टि मे स्त्री शिक्षा - -जी. लीलावती 133
25.टैगोर की दृष्टि में भौतिक व आध्यात्मिक शिक्षा का संक्षिप्त परिचय - -एम.रामचंद्रम 135
26.वीद्रनाथ टैगोर : शिक्षा - दर्शन -शिवहर बिरातर 137
27.रवीन्द्रनाथ टैगोर की दृष्टि में नैतिक शिक्षा - प्रशांत दडिगे 139

भाग - दो

हिंदी साहित्य पर टैगोर का प्रभाव

28.कबीर के रवीन्द्र : रवीन्द्र के कबीर - रणजीत साहा 145
29.कवीन्द्र रवीन्द्र,पंत एवं निराला - अनिता गंगूली 156
30.करुणा के असाधारण प्रतीक रवीन्द्रनाथ और निराला- - अमरनाथ 161
31.रवीन्द्रनाथ टैगोर-हिन्दी साहित्य पर उनका प्रभाव -हेच.एस.एम. कामेश्वरराव 166
32.छायावादी कवि जयशंकरप्रसाद पर टैगोर का प्रभाव-एक विहंग वीक्षणम -पी. जयलक्ष्मी 170
33.रवीन्द्रनाथ टैगोर का व्यक्तित्व और हिन्दी केछायावादी - कवियों पर उनका प्रभाव -पी.वी.डी. श्रीदेवी 173
34.रवीन्द्र और दिनकर के काव्य में मानवतावादी चेतना -आर.श्रीनिवासराव पात्रो 178
35.कविवर रवीन्द्रनाथ का सुमित्रानन्दन पर प्रभाव -नागलगिद्द मारुति 184
36.रवीन्द्रनाथ टैगोर और हिंदी साहित्य पर उनका प्रभाव-युवराज़ धावन 186

भाग - तीन

तेलुगु साहित्य पर टैगोर का प्रभाव

37.प्रयोगधर्मी आधुनिक तेलुगु कविता पर विश्वकवि रवीन्द्र की छाप -आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी 191
38 गीतांजलि और एकांत सेवा में मधुर-भक्ति -पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव 205
39 आधुनिक तेलुगु उपन्यास साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव -एस. कृष्णबाबु 211

40.भावकविता चक्रवर्ती कृष्णशास्त्री पर टैगोर का प्रभाव -सीहेच.वी.महालक्ष्मी 214
41.गीतांजलि का तेलुगु अनुवाद:एक मूल्यांकन -पोलानि सुरेश 221
42.हिन्दी और तेलुगु साहित्य पररवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव : एक परिचय -जी. मोहन नायुडु 224

भाग-चार

प्रमुख भारतीय भाषाओं (मुख्यतः दक्षिण) के साहित्य पर टैगोर का प्रभाव

43.कन्नड साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव -सुनीता मंजन बैल 229
44.मलयालम साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव -के. वनजा 238
45.तमिल और टैगोर - अंग्रेजी मूल : अशोक मित्रन,हिन्दी रूपांतर : -के. श्यामसुंदर 244
46.रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं महाराष्ट्र की परस्पर प्रभावाश्रितता -सोनु जेसवानी 248
47.उडिया साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रभाव - एम.एस.वी.गंगा राजु 256
48.मणिपुर का साहित्यिक परिदृष्य और रवीन्द्रनाथ टैगोर -ई.विजयलक्ष्मी 259
49.गुजरात की आदिवासी भाषाओं में 'गीतांजलि' - आनंदकुमार 267

● ● ●

34

रवीन्द्र और दिनकर के काव्य में मानवतावादी चेतना

आर. श्रीनिवासराव पात्रो

मानवतावाद नये युग की चिन्तन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचार है और विश्व दर्शन की एक महान उपलब्धि। मानवतावाद की मूल और प्रधान स्थापना यह है कि मनुष्य अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अनिवार्य स्थान दे और अपनी सहानुभूतिमयी प्रवृत्तियों को जाग्रत कर अपने व्यवहार -क्षेत्र में आनेवाले प्रत्येक प्राणी के प्रति सदय रहे तथा मानवता की सेवा को ही अपना -प्रधान धर्म माने। नये युग का जीवन और साहित्य इस वाद से अवश्य प्रभावित है।

दिनकर का आविर्भाव हिन्दी साहित्य के एक ऐसे मोड़ पर हआ, जब सम्पूर्ण भारत, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक आंदोलन से गुजर रहा था। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज एवं कई प्रकार के समाज सुधारकों ने जैसे राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, केशवचन्द्र सेन एवं रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि धार्मिक नेताओं ने एवं बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस आदि राजनीतिक नेताओं ने भारत को प्रभावित किया था। दिनकर भी इससे अछूत न रह सके और ये सभी चीजें दिनकर के काव्य में परिलक्षित होते हैं।

दिनकर मूलतः स्वच्छन्दतावादी कवि है। उनके प्रारंभिक काव्य में छायावाद की कल्पनाशीलता रोमांटिकता, विराट प्रकृति के प्रति जिज्ञासा एवं आकर्षण, राष्ट्रीयता, नवोथ्यानवादी भावना, वेदना, कुण्ठा और पलायन सभी तत्व विद्यमान है। उनके काव्य की मूल चेतना तीन धाराओं में वही है -प्रेम, कल्पना और सौंदर्य से युक्त श्रृंगार भावना, ओज से मुक्त राष्ट्रीयता और शांत या निर्वेद का भाव। इन सब के बीच स्वच्छन्दतावाद में ही विद्यमान थे और दिनकर की रचनाओं में भी ये तत्व हैं। यहाँ दिनकर पर रवीन्द्रनाथ टैगोर और नजरूल इस्लाम का प्रभाव पड़ा और साथ ही साथ उन्होंने युग की अभिव्यक्ति भी की है।

सहायक आचार्य (हिन्दी), शासकीय महाविद्यालय, पाडेरू-531024, विशाखपट्टणम् जिला, (आं.प्र.).

भारतीय काव्य साहित्य में रवीन्द्रनाथ टैगोर एक व्यक्ति नहीं अपितु युग है। काव्य एवं कर्म दोनों में उनकी प्रतिभा का अपूर्व योगदान है। रवीन्द्र प्रमुख विचारक थे। उन्होंने बँगला भाषा को एक नया मोड़ दिया तथा साहित्य को सभी विधाओं में समान अधिकार से लिखा। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। आप प्रभावशाली चित्रकार तथा संगीतकार थे। भारत के स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने सक्रिय भाग लिया था। उनका साहित्य एवं जीवन समानान्तर रथ के दो पहियों के समान राजमार्ग पर अग्रसर होता है।

रवीन्द्रनाथ को भारतीय मनीषा का प्रकाश स्तंभ बिना झिझक से कहा जा सकता है। दिनकर के अनुसार - ''हमारे वर्तमान लोहायुग में अगर कवित की मर्यादा को कोई काम रखे हुए हैं, तो वह रवीन्द्रनाथ हैं। ...कविताओं के क्षेत्र में कालिदास, तुलसीदास सूरदास तथा यूरोप के एक दो कवि रवि बाबू के प्रतिद्वन्दी हो सकते हैं। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का जो विलक्षण परिचय दिया हैं, उसे देखते हुए ही ऐसा अनुमान होता है कि संसार के सभी कवियों की आत्माएँ अगर एक हाल में एकत्र की जा सके।,

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन हैं - रवीन्द्रनाथ ने सारे देश में कवियों और कलाकारों के अंतरंग की सर्जनात्मक प्रक्रियाओं को प्रभावित किया। वे कवियों के कवि और कलाकारों के कलाकार है। उनकी महत्ता इस (प्रभाव) में ही निहित हैं न कि उनकी अनूदित कृतियों की संख्या में अथवा छिछले अनुकरण के प्रयासों में।

भारतीय मनीषियों का लक्षण रहा हैं कि वे जब भारतीय दर्शन को नया रूप अथवा उसकी नयी व्याख्या करना चाहते हैं। तब वे प्रस्थानत्रयी (गीता, उपनिषद और ब्रह्म सूत्र) की व्याख्या करते हैं। प्रस्थानत्रयी में भारत वर्ष की श्रेष्ठतम दार्शनिक अनुभूतियों के रक्त में मिश्रित है। उनका स्वभाव में समाया हुआ हैं। उनके विचारों और भावों के मूल में प्रतिष्ठित है। धर्म यहाँ वह है जो सन्तों के जीवन में दिखलाई पड़ता है, जैसा कि रामकृष्ण परमहंस और महात्मा गाँधी के जीवन में वह दिखलायी पड़ा था। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने प्राचीन दर्शनाचार्यों के समान उपनिषदों की व्याख्या लिखी है लेकिन उन्होंने ये व्याख्यान नये युग के संदर्भ में की। वे उपनिषद् पुत्र कहे जाते हैं। उपनिषदों की गेय में उनका विकास हुआ। उपनिषदों के गाम्भीर्य की महिमा से वह आनन्दित हुए थे। उपनिषदों में ब्रह्म को ''रस वैस : की संज्ञा दी गयी हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस ब्रह्म का अनुभव किया था। यही कारण

है कि उनकी वाणी में उपनिषदों का रस मिलता है। किन्तु रवीन्द्र मूलतः अनुभूति के कवि थे। उनके दार्शनिक चिन्तन का आधार अनुभूति है और इसी अनुभूति को उन्होंने अपने काव्य में वाणी दी हैं ।

रवीन्द्रनाथ की कविताएं जब कीट्स के सामने पहले पहल आयीं तब उसने अपने साहित्यिक मित्रों से चकित होकर कहा कि भारत में तो एक ऐसा कवि उत्पन्न हुआ है, जो हम सभी से कहीं श्रेष्ठ और महान है। रवीन्द्र की कविता में जो दिव्यता, कोमलता और सांस्कृतिक पवित्रता व्याप्त थी, उससे चकित होकर कवि एजरा पाउण्ड ने बड़ी विनयशील के साथ कहा कि ''जब मैं टैगोर से विदा होता हूँ तक मुझे मन-ही-मन यह भीन होने लगता हैं कि वह असम्य मनुष्य हूँ जो अभी खाल ही पहने हुए हैं और जिसके हाथ में मात्र पत्थर की लाठी पडीं हुई है।''

आयलैण्ड के उस मेधावी चिन्तक स्वर्गीय जार्ज रसल ने लिखा है जिसने रवीन्द्र को नही देखा, वह इस बात को समझ ही नहीं सकता कि पूर्व कालीन संसार में मनुष्यों की आत्मा पर कवि की आत्मा का वैसा अभेध्य साम्राज्य क्यों था।

रवीन्द्रनाथ की दार्शनिकता और आध्यात्मिक भारतीयता से अनुप्राणित है। टैगोर के दर्शन में ईश्वर, मनुष्य और प्रकृति तीन मूल तत्व हैं। तीनों एक अनिवार्य सम्बन्ध से बँधे हुये हैं। इनमें प्रमुखता मनुष्य ही की है। टैगोर का धर्म मानव धर्म है। वे मनुष्य के सर्वोच्य सत्य मानते हैं और उसके आध्यात्मिक विकास में जो भी बाधक है वह धर्म नहीं है। मानवता की सेवा, मानव भावना का विकास ही धर्म का उद्देश्य है। धर्म निष्क्रियता या सन्यास नहीं है।

टैगोर का मानवतावाद आध्यात्मिक धरातल पर विकसित हूआ था। इसमें यह धारणा निहित थी कि मनुष्य में जो देवत्व है वही उसे प्रेम के बन्धन में बाँधता है, मनुष्य का अपमान ईश्वर का अपमान है और मानव प्रेम तथा मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर भक्ति है।

मानव को सम्बोधित कर रवीन्द्रनाथ ने कहा है - तू आँख खोलकर देख, देवता मन्दिर में नहीं है। जहाँ कृषक खेती कर रहे हैं तथा मजदूर बारहों महीने पत्थर तोड़ते हुए मार्ग बना रहे हैं वे उन्हीं के बीच उपस्थित रहते हैं। इन लोगों की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए लडने का साहस ही परमात्मा के प्रति सच्ची निष्ठा है। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि मानवमूल्य सबसे बढ़कर है। धर्मशास्त्र, राष्ट्र और समाज के नियम कानून की सार्थकता इममें है कि वे मनुष्य के मनुष्यत्व में

सहायक हों। राष्ट्र, समाज और धर्म के आदर्श चाहे जितने उच्च और उदार क्यों न हो, किन्तु यदि उनके बावजूद मनुष्य का जीवन श्रृंखलित बना रहे, उसमें आत्म विकास का संयोग प्राप्त न होने उनका कुछ भी मूल्य नहीं हो सकता। मनुष्य यदि शरीर से स्वस्थ, मन से सबल और सतेज तथा हृदय से उदार और विशाल नहीं बना तो फिर राष्ट्र की व्यवस्था और समाज के नियम उसके लिए काम के हो सकते है?

रवीन्द्रनाथ टैगोर मानव अन्तकरण की पवित्रता को प्रमुख मानते हुए भी व्यक्ति को सामाजिक दायित्व की उपेक्षा नहीं करते थे। उनका कहना था कि '' जो व्यक्ति समाज के प्रति अपने कर्तव्य तथा दायित्व की अवहेलना करके शुद्ध जीवन का पूर्णत्व प्राप्त करना चाहते हैं वह सामाजिक साहचर्य और एकता के आदर्शों के साथ विश्वासघात करता है इस प्रकार हर क्षेत्र में उन्होंने संकीर्णता का विरोध किया।

अपनी स्वाभिमान एवं सेवा भाव की विशिष्ठता का परिचय देते हुए कवीन्द्र रवीन्द्र लिखते हैं - " Give me the strength to make my love fruitfull Service. Give me the Strength never to disown the poor or bend my knees before insolent Might. Give me the Strenghth to raise my mind alove daily trifles - And give me the Strengh to surrender my strength to thy with love."

महाकवि रवीन्द्र को मानवता एवं मानव शक्ति में अखण्ड विश्वास है । मानव शक्ति के विषय में उन्होंने कहा है कि मनुष्य को पृथ्वी पर स्वर्ग निर्माण करने का कार्य सौंप गया है और विधाता जो कुछ उसे देता है उससे वहीं अधिक मानव सृष्टि को दान कर देता है।

पारवीर दियेच गान गाय...सेइ *गान ।तार वेशि करना ,से दान ।अमारे दियेच स्वर आमि तारि विशि वरदान ।बंधन जा दिले मोरि करि तारे मुक्ति ते विलीन*

''पक्षी को तुमने गाना दिया है वह गाना गाता है। उससे अधिक कुछ नहीं दान करता। मुझे स्वर दिया है मैं उससे अधिक दान करता हूँ - मुझे जो बन्धन दिया है उसे मुक्ति में विलीन कर दूँगा।

हुमायूँ कबीर ने रवीन्द्रनाथ के मानव प्रेम के सम्बन्ध में लिखा है - '' रवीन्द्रनाथ ने धरती को इसलिये भी प्यार किया कि वह मनुष्य की वासस्थली है। अनगिनत कविताओं और गीतों में उन्होंने मनुष्य से हृदय की शायद ही कोई ऐसी संवेदना हो जिसने उनके हृदय को स्पन्दित नहीं किया।

रवीन्द्र के मानव प्रेम सम्बंध में दिनकर ने कहा है - रवीन्द्र भारतीय समाज सुधारक मात्र नही है। सच पूछिये तो भारतीय सुधारक राममोहन राय, दयानन्द, केशवचन्द्र, विवेकानन्द और बाल गंगाधर तिलक हुए है। गाँधी और अरविन्द तथा रवीन्द्र का ध्येय भारतीय समाज से अधिक मानव जाति का सुधार अथवा रूपान्तरण था। विश्ववाद की जो भावना गाँधी जी के कर्मयोग और अरविन्द की साधना में प्रतिफलित हुई, रवीन्द्र ने उसका सम्पूर्ण दर्शन अपने काव्य में प्रस्तुत किया है।

विश्वकवि रवीन्द्र की विश्वजनीयता बहुत प्रसिद्ध है। इसलिए लोकहित साथन में लीन मानवतावादी कवि शमधारी सिंह दिनकर की तुलना विश्वकवि रवीन्द्र से करना बहुत सहज है। इन दोनों महाकवियों ने समुन्नत कल्पना को अत्युन्नत स्थान दोनों पर भी मानव - सेवा - भाव तथा धार्मिक चिन्तन को भी समुचित स्थान दिया। अनुभूतिगत और सूक्ष्म भावनाओं को सुकोमल सरस भाषा में अभिव्यक्त करने में दोनों कवियों को अच्छी सफलता मिली।

रवीन्द्रनाथ विश्व साहित्य की विभूति है । उनके साहित्य और शिल्प पर समरत्त विश्व तथा अखिल मानवता की अभिमान है। उनकी वाणी में समस्त मानवता का जयगान किया है। जो सत्ता विश्व सृष्टि की कर्तृशक्ति है और जिसमें परिचालन की प्रबलता है, वही जीव का देह में अन्तर्यामी रूप में अवस्थित रहती है। रवीन्द्रनाथ इस सत्य का साक्षात्कार हमें कराया है। कवि के नोबुल पुरस्कृत काव्य ''गीतांजलि' के प्रसिद्ध गीत चितजेया भय शून्य'' में कवि ने भारत में जिस स्वर्ग के जागरण की कामना व्यक्त की है वह उनका विश्व प्रेम का मानवता का एक उच्चगीत है। उनके सभी गान सार्वभौम है। *'प्रवासी'' में रवीन्द्रनाथ ने कहा है -*

सब टांई मोर घर आछे, आमि सेइ घर मरि खूँजिया

देशे देशे मोर देश आछे, आमि सेइ देश लव जूझिया।

*** *** ***

विशाल विश्व में चारों दिशाओं से प्रत्येक कोना मुझको खींच रहा है, मेरे द्वार पर समस्त जगत है जो करोड़ो हाथों से मुझे धकेल रहा है।

रवीन्द्र के समान दिनकर के गीतों में, कविताओं में विश्व प्रेम की भावनायें अभिव्यक्त है। उनका काव्य भी सह अरितत्व, सहिष्णुता, भातृत्व भावना की स्रोतस्वनी धारा से आप्लावित है।

दिनकर मानव के कवि है। इनका मानवतावादी दृष्टिकोण अत्यन्त सुदृढ है। कवि दिनकर को सारी धरती दासता के बन्धन में जकड़ी हुई दृष्टिगोचर होती है। देश सम्राज्यवादी तृष्णा से अत्यन्त व्याकुल दिखाई पड़ता है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के हेतु विनाशकारी शास्त्रों के निर्माण में लीन लोगों को देख-सुन मानवता कराह उठती है। उनके रेणुका, नीलकुसुम, कुरुक्षेत्र, रसवन्ती, रश्मिरथी आदि काव्यों में समस्त शोषित जातियों के आप्तस्वर सुनाई पड़ते हैं।

दिनकर के विचार से भारतीय स्वतन्त्रा का आंदोलन धरती के समस्त पराधीन दोशों का आंदोलन है और उनका यह विचार 'रेणुका' में संग्रहीत 'करमैदेवाय' में देखा जा सकता है।

रेणुका में ही कवि समाज में परस्परिक स्नेह, धार्मिक ऐक्य तथा पर्याप्त सुख-समृद्धि की मंगल कामना व्यक्त करते हुए कहता है-

''जन जन सन्तुष्ट रहे हिल-मिल आपस में प्रेम बढ़ाकर धर्म भिन्नता हो न, सभी जन शैली तटी में हिलमिल जायें। ऊषा के स्वर्णिम प्रकाश में भावुक भक्ति मुग्ध मन गायें।

कवि दिनकर के लिए भारत का भी वहीं रूप वन्दनीय हैं, जहाँ मानवता विश्वशांति तथा धर्म से समन्वित हो, व्यक्ति सत्य और न्याय पर अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए तत्पर रहे-

''उठे जहाँ भी घोष शान्ति का भारत स्वर तेरा हैं। / *धर्म-दीप हो जिसके भी कर में वह नर तेरा हैं, / तेरा हैं वह वीर, सत्य पर जो अड़ने जाता है* / किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है।''

एक हाथ में करूणा, स्नेह, क्षमा, शान्ति का प्रतीक कमल धारण किये हुए तथा दूसरे हाथ में धर्म से संपृक्त को थामे हुए भारत की कल्पना पूर्णतः मानवतावादी भावनाओं से अनुप्रणित है।

एक हाथ में कमल, एक में धर्म की दीप्त विज्ञान / लेकर उठनेवाला है धरती पर हिन्दुस्थान।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर वस्तुतः मानवता के कवि हैं और मानवतावाद ही उनके जीवन दर्शन की परिधि का केन्द्रबिन्थु है। प्रकृति, सौंदर्य, भौतिकवाद, राष्ट्रीयतावाद, अंतर्राष्ट्रीयतावाद और आध्यात्मिकता आदि की विचारधाराओं की स्वीकृति और भिन्न भिन्न विचार धाराओं में समन्वय की योजना के मूल में दोनों का मानवतावाद और मानवकल्याण की भावना ही क्रियाशील है। ■